म्भारी. सर्विषक्षणशिरसः पुरस्तात्शिरोदेशस्यैव पादांतरेपादसमीपप्रदेशे ॥ ९॥ ८॥ अगस्येनशास्ताशिक्षितातांदक्षिणांअभितः सर्वेपिदक्षिणाशिरसः पुरस्तात्शिरोदेशस्यैव पादांतरेपादसमीपप्रदेशे ॥ ९॥ ॥ अगदिपर्व पादोपधानीवसर्वेषांपादस्पर्शेलभमाना कुशेषुकुशासनेषु ॥ १० ॥ पृतनाधिकाराः सेनाधीशयोग्याः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १२ ॥ अप्रतिविदमानःअजानन् ॥ १४ ॥ मूर्ष्निपदंहीनवर्णयोगात् वैश्यपक्षेतुन

सार्षष्टरूपेवतुराजपुत्रीतस्यावचःसाधुविशंकमाना॥यथावदुक्तंप्रचकारसाध्वीतेचापिसर्वेबुभुजुस्तदन्नं॥७॥कुशैसुभूमौश्यनंचकारमाद्रीपुत्रःसहदेव स्तरस्वी॥ यथास्वकीयान्यजिनानिसर्वेसंस्तीर्यवीराःसुषुपुर्धरण्यां॥८॥अगस्त्यशास्तामभितोदिशंतुशिरांसितेषांकुरुसत्तमानां॥कुंतीपुरस्तानुबभूवतेषां पादांतरेचाथवभूवरुष्णा॥ ९॥ अशेतभूमौसहपांडुपुत्रैःपादोपधानीवरुताकुशेषु॥ नतत्रदुःखंमनसापितस्यानचावमेनेकुरुपुंगवांस्तान्॥ १०॥ तेतत्र शूराःकथयांवभूवुःकथाविचित्राः पतनाधिकाराः॥असाणिदिव्यानिरथांश्चनागान्खद्गान्गदाश्चापिपरश्वधांश्च॥ ११॥ तेषांकथास्ताःपरिकीर्त्यमानाः पंचालराजस्यसुतस्तदानीं॥शुश्रावरुष्णांचतदानिषण्णांतेचापिसर्वेददशुर्मनुष्याः॥१२॥ धृष्ट्युम्नोराजपुत्रस्तुसर्वटत्तंतेषांकथितंचैवरात्री॥ सर्वराह्मेहुप दायाखिलेननिवेद्यिष्यंस्वरितोजगाम ॥ १३ ॥ पंचालराजसुविषण्णस्पस्तान्पांडवानप्रतिविद्मानः॥ धृष्ट्युम्नंपर्यपुच्छन्महात्माकसागताकेननीता चरुष्णा॥१४॥ किचन्नश्रद्रेणनहीनजेनवैश्येनवाकरदेनोपपन्ना॥ किचत्यदंमूर्ध्निनपंकदिग्धंकिचन्नमालापतितारमशाने॥१५॥ किचत्सवर्णप्रवरोमनु ष्यउद्रिक्तवर्णोप्युतएवकचित्॥ कचिन्नवामोमममूभिपादः रूष्णाभिमशैनरुतौ उद्यप्त्र ॥ १६॥ कचिन्नतप्येपरमप्रतीतः संयुज्यपार्थेननर्षभेण॥ वद स्वतत्त्वेनमहानुभावकोसौविजेतादुहितुर्ममाय॥ १ शाविचित्रवीर्यस्यसुतस्यकचित्कुरुप्रवीरस्यधियंतिपुत्राः॥ कचित्तुपार्थेनयवीयसाऽयधनुर्गृहीतंनि हतंचलक्ष्यं॥ १८॥ इतिश्रीमहाभारतेआदिपर्वणिख्यंवरपर्वणिधृष्टयुम्नप्रत्यागमनेद्दिनवत्यधिकशततमोऽध्यायः॥ १९२॥ स्वयंवरपर्व॥ अथवैवाहिकपर्व॥ वैशंपायनउवाच ततस्तथोक्तःपरित्रष्टरूपःपित्रेशशंसाथसराजपुत्रः॥धृष्ट्युम्नःसोमकानांप्रबहेीं वत्तंयथायेन

ह्ताचरुणा॥ १॥ स्ति चरुष्णा ॥ १ ॥ पातित्यं शुद्रपक्षेतुपयुवाएतत्रमशानंयच्छूद्रइतिशूद्रस्यपादयुक्तश्मशानत्वश्चतेस्त्रमाठावत्सुकुमारीबाठानपिततेतिस्पष्टमुक्तं ॥ १ ५ ॥ सवर्णप्रवरःक्षत्रियश्चेष्ठः उद्विक्तव णित्राह्मणः मूर्प्तिपादस्तुवेषमात्रेणब्राह्मणत्वानिश्वयात्शीर्यस्यच्योः सृतशूद्रयोरिपदष्टत्वात्संभावितः ॥ १६ ॥ कचिदितिकामप्रवेदने पार्थेनसंयुज्यपरमप्रतीतोत्यंतरृष्टोसि तादृशशीर्यस्यान्य ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०